जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
सहसंपादक : सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५४ वे ❖ अंक ७ वा ❖ मार्च २०२३ ❖ वीर संवत २५४९ ❖ विक्रम संवत २०७९

या अंकात	पान नं.		पान नं.
● करें इन्द्रियों का सदुपयोग	१५	● कर्मों से मुक्ति : मोक्ष	४३
● केंद्रिय संस्कृत विश्व विद्यालय, नई दिल्ली	१८	● ऐसी हुई जब गुरु कृपा	४५
● गुरु चरण तीर्थ, चिचोंडी	१९	● क्रोध को नियंत्रित कैसे करें	४७
● जीतो नगर, पुणे	२०	● ''वन्दना'' गुड मॉर्निंग नहीं	४९
● गुरु गौतम मुनि चॅरिटेबल ट्रस्ट, पुणे	२१	● भयाचे भय सोडून द्या	५९
● श्री. गुलाबचंदजी कटारिया - राज्यपाल	२३	● अनित्य भावना, चिन्तन भावना	६१
● श्री. आनंद चोरडिया - पुरस्कार	२३	● सुंदर बाराखडी	६२
● कव्हर तपशील	२४	● रंगबिरंगी : रंग भावना के	६३
● मोक्ष मार्ग के २१ कदम : सत्य	३१	● मुझे ऑफलाईन माँ चाहिए	६५
● सुक्ति से मुक्ति : ईश्वर	३५	● लाट गावच्या कन्यांचा आंतरजातीय विवाह न करण्याचा निर्धार	६७
● ओली आई तप का, जाप का, करें भाव से आराधन	३६	● भूतां परस्परे पडो - मैत्र जीवांचे	६८
● जैन शासन के चमकते हिरे		● अपना अधिकार, अपना कर्तव्य	७०
❊ कलावती	३९	● जागृत विचार	७०
❊ आषाढभूती	४०	● स्त्री सन्मानाचे नऊ संकल्प	७१
❊ श्री सती सुभद्रा	४१	● गौतम लब्धि डायग्नोस्टिक सेंटर, पुणे	७३
● १० पैसे की सुई लौटाने के लिए १० किमी पैदल चली जैन साध्वी	४२	● सुर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार २०२३	७४
		● डॉ. संजयजी बी. चोरडिया - पुरस्कार	७६

- दादावाडी, पुणे – संगीत स्पर्धा ७६
- भारतीय जैन संघटना, पुणे विभाग ७७
- श्री. कटारिया – अनोखे संथारावरण ८३
- आनंदधाम अहमदनगर ८६
- श्री. मनोज छाजेड – सन्मान ८७
- कु. साक्षी छाजेड – जलतरणपटू ८७
- राजेश नाहर – नाहर डायमंड पुरस्कार ८८
- १०८ फुट का जैन धर्म ध्वज ८८
- पूना मर्चंटस् चेंबर – आयुक्तांना निवेदन ८९
- डायग्नोपिन, गोवंडी, मुंबई – उद्घाटन ८९
- दि पूना मर्चंटस् चेंबर – उद्घाटन ९१
- जैन तत्त्व प्रकाश – प्रतियोगिता ९२
- आठ कर्म निवारण पूजाएँ – प्रतियोगिता ९२
- श्री. अजितजी सुराणा – पुरस्कार ९३
- श्री वर्धमान एज्युकेशन, पुणे निबंध स्पर्धा ९७
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात - रोख/Google Pay, M. 9822086997/
AT PAR चेक/पुणे चेकने/RTGS इत्यादी द्वारा पाठवावी

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA • Branch : Market Yard, Pune 37.
Current A/c No. : 10521020146 • IFS Code : SBIN0006117

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे - ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे - ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक - एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

करें इन्द्रियों का सदुपयोग

लेखक : आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्रजी म.सा.

सिध्द-स्वरुपी सिध्द भगवन्त, पाप-प्रकृतियों को क्षय करने वाले अरिहन्त भगवन्त तथा पाप को संताप मानकर समिति-गुप्ति की साधना में रत रहने वाले संत भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन !

बन्धुओं !

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में एक-एक दुर्लभ बोल की हम चर्चा कर रहे हैं। साधना करने में जिन-जिन बोलों की आवश्यकता होनी चाहिए, दूसरे शब्दों में जिस अनन्त-अनन्त पुण्यवानी का उदय चाहिए उसमें से अनेक बोल हमने प्राप्त कर लिए हैं। भगवान की भाषा कहूँ- अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आने के लिए न जाने कितने अनन्तकाल बिताए, अनन्त चौबीसियाँ होने के बाद यह जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आया। इस जीव का पुण्य उदय हुआ तब कहीं जाकर यह जीव अव्यवहार राशि से व्यवहार राशि में आया। व्यवहार में आने के बाद उत्तराध्ययन सूत्र, जो प्रभु महावीर की अन्तिम वाणी है, उस वाणी का पारायण कीजिए तो ज्ञात होगा कि एकेन्द्रिय के स्थान में जीव का कितने काल तक भ्रमण हुआ? पृथ्वीकाय, अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय में असंख्यात काल और वनस्पतिकाय में अनन्त काल जीव को रहना पड़ा। जीव को एक-एक काय में अनन्त अथवा असंख्यात काल तक रहना पड़ा। मैं तो यह बात कह गया, मुझे कहने में कितनी देर लगी? कहने में देर नहीं लगती, भोगने में अनन्त या असंख्यात काल लगता है।

दुःख की घड़ियाँ कैसे बीतती है यह तो भोगने वाले को मालूम पड़ता है । भोगने वाला जानता है कि एक-एक क्षण, एक-एक पल कैसे बीतता है? आप आज प्रमाद में आराम में, नींद में, बेहोशी में कितना समय जाया कर देते हैं? है कोई समय बर्बाद करने की गणना? कब-कितना-कहाँ समय बीतता है शायद आपको पता नहीं। पर, जिन्होंने सहन करते-करते समय बिताया है, उनको मालूम है कि समय कैसे बीता? जीव किस तरह पृथ्वीकाय में रहा? पृथ्वीकाय में रहते जीव कितनी बार काटा गया, कितनी बार पिसा गया, कितनी बार मसला गया, कितनी बार पकाया गया, है कोई हिसाब ? खदान से निकालने की बात ही लीजिए। खदान से पत्थर, कोयला, सोना जवाहरात निकलते हैं। पहले खदान खोदी जाती है। धातु या जवाहरात भी हैं तो रेत मिश्रित हैं। खोदने के बाद सफाई की जाती है, तेजाब से मैल दूर किया जाता है तब कहीं जाकर रत्न अलग होता है। एक-एक रत्न को निकालने में असंख्य-असंख्य जीवों की घात होती है। खदान ही क्यों, समुद्र से निकालना हो तो भी यही बात है। समुद्र से मोती निकाले जाते हैं। जीवों की कितनी घातें होती होंगी, जरा विचार करना ।

इस जीव ने कहाँ-कहाँ दुःख नहीं भोगा? दुःख भोगते हैं तब पता चलता है। कभी किसी को दो दिन अस्पताल में रहकर चीरफाड़ कराने का अवसर आया हो तो कितनी बार घड़ी पर नजर गई? क्यों बार-बार समय देखा जाता है? मतलब, भोगते हैं तब अनुभव होता है। एकेन्द्रिय में जीव था, तब क्या अनुभव हुआ? पृथ्वी हो, पानी हो, अग्नि हो, जीव सब जगह हैं। पानी का आज कितना दुरूपयोग हो रहा है? पाप करना सरल है, पाप को भोगना कठिन है। आप इस देह को चाहे जितनी सुख-सुविधाएँ दे दें, पर कितने-कितने पाप कर्म बन्ध रहे हैं उस पर कभी विचार क्यों नहीं करते? स्नान करने वाला लोटे भर पानी से काम कर

सकता है, एक बाल्टी से नहाया जा सकता है पर नल के नीचे बैठकर घंटों नहाने वाले हैं या नहीं? तालाब नदी में स्नान करने वाले भी हैं। आप कहीं नहायें, नहाने के कुछ समय बाद क्या होगा? क्या फिर पसीना नहीं आएगा? आप जरा सोचिए तो सही कि इस जीव ने कितनी वेदनाएँ सही हैं ? एक-एक बात कहने जाऊँगा तो बात पूरी होगी या नहीं पर आपका समय पूरा हो जाएगा।

आज कितना अनर्थ हो रहा है उस सम्बन्ध में अधिकांश लोगों की न सोच है और न हिंसा से बचने का लक्ष्य ही। एक-एक शादी में हजारों लाईटें लगती हैं। मकान के ऊपर से नीचे तक ही नहीं, पूरे चौगान तक ही नहीं, गली तक लाईटें लगाई जाती हैं। जीव विराधना का हिसाब लगाओ तो? आज तो किन-किन जीवों की कहाँ-कहाँ विराधना नहीं हो रही है, कौन-कौन से जीवों को कष्ट नहीं पहुँचाया जा रहा है ? आप अगर इसी तरह पाप करते रहे तो सोचिये आपकी क्या स्थिति बनेगी ?

आपने शास्त्रों के माध्यम से सुना है कि अनंत-अनंत पुण्य बढ़ने पर यह जीव एकेन्द्रिय से बेइन्द्रिय में आया। इन्द्रियाँ क्या होती हैं, पच्चीस बोल जानने वाले को ज्ञात हैं। इन्द्र और इन्द्रियाँ दोनों अलग-अलग हैं। इंद्र अर्थात अतुल वैभव । इन्द्र अर्थात् श्रेष्ठतम शक्ति वाला। इंद्र का वैभव, ऐश्वर्य, सुख कितना है? परन्तु ये इन्द्रियाँ इन्द्र से भी ज्यादा शक्तिशाली हैं। इन्द्रिय इन्द्रलिंग:। इंद्र की पहचान है लिंग है। ऐश्वर्य, बल और शक्ति की पहचान। एक-एक इन्द्रिय में न जाने कितना-कितना ज्ञान है । बहुत पुण्यवानी होती है तब एकेन्द्रिय का जीव बेइन्द्रिय में आता है । एक-एक योनी में असंख्यात भव हैं । आप गणना करने जाओ तो आपका कम्प्युटर फेल हो जाये । एकेन्द्रिय से बेइन्द्रिय, बेइन्द्रिय से तेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय से चउरिन्द्रिय, फिर पंचेन्द्रिय । पाँच इन्द्रियों का स्वामी पंचेन्द्रिय होता है। इन्द्र की ताकत आपने सुनी होगी। इन्द्र क्षण-भर में जो चाहे कर सकता है। परन्तु इन्द्रियों का ज्ञान और उसका उपयोग यदि संवर करणी में करें तो कर्मों की निर्जरा करते देर न लगे। एक-एक इन्द्रिय का बल है और यदि पाँचों इन्द्रियों का बल संयुक्त हो जाय तो फिर कहना ही क्या? पाँचों इन्द्रियों की सहायता करने वाला है नो इन्द्रिय मन भी यदि वह जुड़ जाय तो आप अतुल बली हो जायेंगे।

जीव असन्नी से सन्नी कब बनता है? इन्द्रियों के साथ जब मन जुड़ जाय तो जीव सन्नी बनता है। इस जीव ने इतनी पुण्यवानी कर ली परन्तु इतनी पुण्यवानी होने के बाद भी इन्द्रियों का उपयोग क्या किया? क्या इसका उपयोग थाँरी-म्हारी में करना चाहिए? निन्दा - विकथा में, खाने-पीने में, मौज-शौक में, ऐशो-आराम में या सोने में उनका उपयोग किया तो कहना होगा पुण्यवानी से उन्हें पाना, नहीं पाने के समान हो गया।

ये बहिनें चूँदड़ी ओढ़ती हैं। चूँदड़ी का उपयोग क्या है? क्या आँगन साफ करने में चूँदड़ी का उपयोग है? क्या अशुचि को पौंछने में इसका उपयोग है? आदमी वस्तु की कद्र करना जानता है लेकिन व्यक्ति की कद्र करना नहीं समझता। ये इन्द्रियाँ अनमोल हैं। इन्द्रियों का उपयोग साधना के लिए हो। आपको नर से नारायण, जीव से शिव, आत्मा से परमात्मा बनना है न कि तेल-नमक-लकड़ी में जीवन खपा देना है।

मैंने बहुत पागल देखे हैं। पर जो आदमी जानकार है, पढ़ा-लिखा है, सब कुछ समझता है उसे पागल कहूँ तो मेरा ऐसा कहना एकान्ततः गलत नहीं होगा। सचमुच आदमी पागल ही तो है। आप पूछेंगें - ''महाराज! आदमी जानता है, ज्ञानी है तो फिर वह पागल कैसे?'' इन्द्रियाँ और मन पाना अनमोल है। आप तेरी-मेरी में, हिंसा-झूठ में, चोरी-कुशील में लगकर न जाने कितने अनमोल रत्न-रूप सम्पत्ति को

बर्बाद कर रहे हो? इन्द्रियों की शक्ति सार्थक हो रही है या बर्बाद? आपका इस पर चिन्तन तक नहीं गया।

अधिकांश लोग ऐसे है जो कहते हैं – ''महाराज! अपने लिए समय नहीं। आपको समय नहीं, पर मान लीजिए कोई दूसरा व्यक्ति आपके पास आ जाय तो शायद समय है, तब कहीं माला फेरते फेरते या स्वाध्याय करते-करते उठ तो नहीं जाएँगे?'' शास्त्र की भाषा में कहूँ- ये इन्द्रियाँ, मात्र ज्ञान करने के लिए हैं, न कि भोग भोगने के लिए। भोग करना इन्द्रियों का दुरूपयोग है। इन्द्रियों का सही उपयोग ज्ञान करने में है, भोग भोगने में नहीं। अगर इन्द्रियों का ज्ञान करने में उपयोग किया जाता है तो अब तक संसार में भटकना नहीं पड़ता।

आप जानते हैं- बच्चा जन्मता है तो क्या साथ लाता है? क्या जन्मते समय बच्चे के सोने का कन्दौरा होता है? सोने का कन्दौरा तो दूर की बात, धागा तक नहीं होता। खाली हाथ आया था। आप सब जन्में थे तो हाथ खाली थे फिर पाँच-पचास रूपयों के लिए झगड़ा क्यों? अनन्त-अनन्त पुण्यवानी से प्राप्त मनुष्य जन्म का क्या महत्व है? आज इन्द्रियों का उपयोग ज्ञान के लिए नहीं, भोग के लिए हो रहा है तो उसे क्या कहना चाहिए ?

एक बार चन्द्रराजजी सिंघवी दर्शनार्थ आए थे। वे बाहर खड़े रह गये, पाँच-सात मिनट बीत जाने पर भी अन्दर नहीं आए। उनके हाथ में कुछ था। पूछा- यह क्या? वे राजकीय अधिकारी थे। सेकेट्री लेवल के अधिकारी होने से मोबाइल मिला था। उस समय हर किसी के पास मोबाइल सुलभ नहीं था, शीर्ष अधिकारियों को साधन, सुलभ करवाया जाता। आज क्या स्थिति है? आज तो हर व्यक्ति के पास मोबाइल है। नाई हो, धोबी हो, मजदूर हो, सफाई कर्मी हो, बच्चा हो अथवा घर का कोई सदस्य क्यों न हो, हर एक के पास मोबाइल है। मोबाइल सबके पास है, लेकिन मोबाइल का सही उपयोग सब करना नहीं जानते। मुझे कहना यही है कि एक-एक इन्द्रिय अनमोल है, उसका सावधानी से उपयोग करना चाहिए।

आज आँखें, कान, मुँह का क्या उपयोग हो रहा है? आप धर्म स्थान में बैठे हैं, यहाँ कोई किसी की निन्दा कर रहा है तो आपके कान सुनने के लिए बेताब हो जाते हैं। आज साधनों का दुरूपयोग किया जा रहा है इसीलिए कहा जाता है कि मनुष्य और पशु में क्या अन्तर है? पशु कौन? पश्यति चरम चक्षुः इतिः पशुः । जो चमड़े की आँख से देखता है, वह पशु है। पश्यति ज्ञानचक्षुः इति मानवः । जो बुध्दि से, ज्ञान से देखता है, समझता है वह मानव है। ''मननात् इति मानवः ।'' मनन करने वाला मानव होता है। आप मानव हैं तो मुँह से गाली नहीं निकलनी चाहिए।

आप चिन्तन करें कि प्राप्त इन्द्रियों का उपयोग कर्म काटने में हो रहा है या कर्म बाँधने में? सुनना एक साधन है। अगर सही सुनना नहीं आया तो मानकर चलना कि जो नौ बोल मिलें हैं वे कहाँ ले जाएँगे? पहले के लोग कहा करते थे- नौ घाटी पार हो गई? एक-दो घाटी पार करना कितना मुश्किल होता है, नौ घाटी पार हो जाना सहज नहीं है ।

कहने को बहुत कहा जा सकता है। मानव वह है जो ज्ञान की आँख से देखे। ज्ञान की आँख हेय-उपादेय का बोध कराने वाली है। धर्म-अधर्म का, कर्त्तव्य - अकर्त्तव्य का भान, ज्ञान की आँख से होता है। आपने ज्ञान का सही उपयोग नहीं किया तो कहने वाले कह देंगे- यह तो गधे पर चन्दन का बोझ लदा है।

हम हिंसा का त्याग करें नहीं तो कथनी और करनी में फर्क रहेगा। इन्दौर में एक बार भाषण प्रतियोगिता का आयोजन हुआ । अहिंसा पर प्रभावी भाषा-शैली में भाषण किया जा रहा था। बोलने वाला कहो या भाषण देने वाला वह ज्ञानी नहीं था। भाषण करते-करते लोग मंत्र मुग्ध थे। वह वक्ता भी पसीने-

पसीने हो रहा था। पसीना पौंछने के लिए जेब में रखे रूमाल को निकाला। रूमाल के साथ जेब में रखा अण्डा बाहर निकल आया। जो भाई अहिंसा पर तर्क पर तर्क रख रहा था, हिंसा त्याज्य है कह रहा था उसकी जेब से रूमाल के साथ अण्डे का निकलना क्या बहुरूपियापन नहीं है? क्या उसे अहिंसा की बात करने का हक है? आप उस बहुरूपिये पर हँस सकते हैं पर आपको भी यह विचार करना चाहिए कि जो कुछ उपदेश में कहा जा रहा है उसका पालन भी हो रहा है या नहीं। कहने और करने में फर्क है तो कहना प्रभावी नहीं हो सकता। तुलसीदासजी ने कहा –

काम, क्रोध, मद, लोभ की जब लग घट में खान ।
तुलसी पण्डित-मूरखा, दोनों एक समान ।।

आज अधिकांश मानव अच्छी बात कहते हैं किन्तु कहे अनुसार आचरण देखने को नहीं मिलता तो उसकी बात निष्प्रभावी रहती है। लोग कहने लग जाते हैं – ''ये मुझे जैसा मन में आया कहते रहे तो क्या मैं उसकी सुनता ही रहूँ, सुनने की एक सीमा होती है। मैं क्यों सुनूँ? मैं कहाँ तक सुनूँ?'' आपको इन्द्रियाँ मिली हैं, उनका सही उपयोग करें। अनन्त-अनन्त पुण्यवानी के उदय से इन्द्रियों की प्राप्ति हुई है, अगर इनका सदुपयोग किया जाय तो एक-एक समय में अनन्त अनन्त कर्म काटे जा सकते हैं। आप प्राप्त इन्द्रियों का सदुपयोग करें, यही मंगल मनीषा है। ●

केंद्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
पालि – प्राकृत योजना

भारत सरकार की योजनाओं को संचालित करने के लिए केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय नई दिल्ली में पालि-प्राकृत भाषा एवं साहित्य का परिचय जनसामान्य को कराने के लिए २००९ से विविध प्रायोजनाओं पर कार्य किया जा रहा है। भारत में प्रायः सभी प्रदेशों में पालि-प्राकृत साहित्य उपलब्ध होता है तथा बहुत सारी संस्थाएँ (विद्यालय, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, शोधसंस्थाएँ इत्यादि) इस दिशा में महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहे है किन्तु भारत सरकार के पास इन सबकी विवरणात्मक जानकारी (Data-based information) उपलब्ध नहीं है अतः केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय सर्वेक्षण के माध्यम से यह विवरणात्मक जानकारी एकत्रित कर रहा है।

इसके लिए हमें पालि-प्राकृत भाषा एवं विषय के जानकार विशेषज्ञ विद्वानों एवं संस्था प्रधानों से अपेक्षा है कि वे पालि-प्राकृत के लिए उनके द्वारा किए गए कार्यकलापों, यथा विद्यालयों, महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों के स्तर पर अध्ययन-अध्यापन, शोधानुसंधान का संचालन, छात्रवृत्ति आदि सहायता देकर प्रोत्साहन आदि का विवरण लिंक पर उपलब्ध प्रपत्र में भरकर इस मेल (csuprakrit2020@gmail.com) पर प्रेषित करें।

आपका यह सहयोग पालि-प्राकृत वाङ्मय एवं भाषा के विकास के लिए भारत सरकार द्वारा संचालित विविध योजनाओं को क्रियान्वित करने में उपयोगी होगा तथा समस्त देश में व्याप्त पालि-प्राकृत विषय के विद्वानों एवं संस्थाओं को मिलकर काम करने का अवसर मिल सकेगा।

विवरण की लिंक –

https://drive.google.com/file/d/1s1CJufL4ErnuWhe3RPS4Tmi6tg75fjWW/view?usp=sharing

सम्पर्कसूत्र (प्राकृत) –

प्रो. श्रीयांश कुमार सिंघई, जयपुर, समन्वयक (९०५७५०६९१९)

डॉ. धर्मेन्द्र कुमार जैन, दिल्ली, विकास-अधिकारी (७९७६९११६४८)

(पालि) – १. डॉ. गुरुचरण सिंह नेगी, लखनऊ, समन्वयक (९१४०४९८८२२)

२. डॉ. जयवंत खण्डारे, दिल्ली, विकास अधिकारी (८०८१४१४९७७) ●

गुरु आनंद तीर्थ – चिचोंडी
''गुरु चरण तीर्थ''चे भूमी शुध्दि कार्यक्रम संपन्न

उपाध्याय प.पू. श्री प्रविणऋषिजी म.सा. यांच्या प्रेरणेने अहमदनगर जिल्ह्यातील पाथर्डी तालुक्यातील चिचोंडी या श्री आनंदऋषिजी म.सा. यांच्या जन्म गावी ''गुरु आंनद तीर्थ'' या भव्य प्रकल्पाची निर्मिती होत आहे. या भव्य तीर्थात ''गुरु चरण तीर्थचा'' भूमी शुध्दिचा कार्यक्रम २४ फेब्रुवारी २०२३ रोजी संपन्न झाला.

''गुरु चरण तीर्थ'' निर्माण करण्याचा लाभ पुणे येथील श्री. सुनीलजी, सचिनजी नहार व नहार परिवार व बेंगलोर येथील मे. मामजी छगनलालजी नवरतनमलजी बंब ॲण्ड सन्सचे श्री. प्रवीणजी व श्री. अनीलजी बंब व बंब परिवाराला मिळाला.

भूमी शुध्दिचा कार्यक्रम नहार परिवार, बंब परिवार व गुरु आनंद तीर्थ फाऊंडेशनचे ट्रस्टी श्री. सतिशजी सुराणा, श्री. सुभाषजी मुथा, श्री. रमणलालजी लुंकड, श्री. रविंद्रजी नहार, श्री. अजितजी भंडारी, श्री. विलासजी पालरेशा, श्री. किशोरजी पितळे, श्री. किरणजी बोरा सर इ. मान्यवरांच्या शुभहस्ते महासतीजी श्री प्रीतिदर्शनाजी, श्री ओजसदर्शनाजी आदि ठाणा यांच्या सान्निध्यात संपन्न झाला.

सकाळी ९ ते ११ या वेळेत भूमी शुध्दिकरण कार्यक्रमानंतर सभाचे आयोजन करण्यात आले. गुरु आनंदतीर्थ फाऊंडेशनचे अध्यक्ष श्री. सतिशजी सुराणा यांनी प्रस्ताविक मध्ये तीर्थासंबंधी सर्व माहिती सांगितली. नहार व बंब परिवारांचा सत्कार ट्रस्ट तर्फे करण्यात आला. निर्माणधीन ''गुरु चरण तीर्थचा'' आर्किटेक द्वारा भव्य स्क्रीन वर प्रेझंटेन्शन दाखवण्यात आले. गत ४ वर्षापासून अनेक आर्किटेक द्वारा मुख्य तीर्थाचे डिझाईन निर्माण करण्याचे काम चालू होते. डिझाईन बनवण्यात परदेशातील आर्किटेक्टचेही मदत घेण्यात आली. यानंतर श्री. सुनिलजी नहार यांनी आपले मनोगत व्यक्त केले. Online च्या माध्यमातून उपाध्याय प.पू. श्री प्रविणऋषिजी म.सा. यांनी आशीर्वाद दिले. या कार्यक्रमास संपूर्ण महाराष्ट्र व भारतातून भक्तगण उपस्थित होते.

तीर्थ निर्मितीसाठी चिचोंडी, शिराल येथे ४० एकर जागा खरेदी करण्यात आली असून सर्व शासकीय परवानग्या घेतल्या नंतर प्रत्यक्ष कामास सुरुवात झाली. पहिल्या टप्प्यामध्ये कामास धर्मसभा मंडप, भोजन शाळा, अतिथीगृह, कर्मचारी निवास, रस्ते व वृक्षारोपणाचे काम पूर्ण करण्यात आले व डिसेंबर २०१७ मध्ये हजारो भाविकांच्या साक्षीने पहिल्या टप्प्याचा लोकार्पण सोहळा संपन्न झाला.

नंतर दुसऱ्या टप्प्याचे काम सुरु करण्यात आले. त्यामध्ये स्नेहालय (वृध्दाश्रम), साधु स्थानक, साध्वी

स्थानक, सिमेंट रोड, पाणी पुरवठा व इंफ्रास्ट्रक्चरची सर्व कामे पूर्ण करण्यात आली असून दुसऱ्या टप्प्याचा लोकार्पण व पंचतीर्थ म्हणजेच नवकार कलश, गौतम निधी तीर्थ, समवशरण तीर्थ, अर्हंम् तीर्थ, आनंद म्यूझियम मध्यभागी केन्द्रीय तथा ''गुरु चरण तीर्थ'' या तीर्थच्या भूमीपूजनाचा समारोह जानेवारी २०२१ रोजी संपन्न झाला. हे पाच तीर्थ ५ एकर मध्ये मकराणा मार्बल मध्ये साकार होत आहेत. या पाच तीर्थांपैकी नवकार कलश तीर्थ व समवशरण तीर्थ ही दोन तीर्थ मे २०२३ पर्यंत पूर्ण होत आहेत.

''गुरु चरण तीर्थ''चे काम १८ महिन्यात पूर्ण करुन संपूर्ण तीर्थ लोकापर्ण सोहळा महोत्सव सन २०२५ मध्ये उपाध्याय प.पू. श्री प्रविणऋषिजी म.सा. यांच्या हस्ते करण्याचा गुरु आनंद तीर्थ फौंडेशनची मनीषा आहे.

गुरु आनंद तीर्थ फौंडेशन तर्फे चिचोंडीत ४० बेडचे हॉस्पिटल, निसर्ग उपचार केंद्र, शैक्षणिक संकुल इ. चे लवकरच काम सुरु होत आहे. ●

जीतो पुणे चैप्टर ''जीतो नगर'' – ४७७ फ्लॅटस् साधर्मिक भाई बहन फॉर्म भरे

आप सभी जानते है कि, जीतो पुणे चैप्टर जैन साधर्मिक परिवारों के लिये ''जीतो नगर'' आवास योजना का निर्माण कर रहा है । जिसके तहत ४७७ फ्लॅटस् (1BHK – लगभग ४४० स्क्वे. फूट) साधर्मिक भाई – बहनों के लिये यहाँ पर आवास की योजना हो रही है । ये कार्य पूना के मध्य स्थित गंगाधाम चौक के नज़दीक होने जा रहा है और पुरे जोरों शोरों से ये कार्य शुरू है।

पहली शृंखला के जो फॉर्म्स थे, वो हमारे जीतो के कार्यकर्ताओं ने उसकी जाँच कर के चयन किया है । अब दूसरी शृंखला के फॉर्म्स जीतो पुणे चैप्टर ऑफिस में उपलब्ध है ।

जिन साधर्मिक भाई–बहनों को आवास योजना में सम्मिलीत होना है और घर की अवश्यकता है वे जरूर संपर्क करें और यह फॉर्म जरूर भरें ।

❊ इस योजना के कुछ नियम है वही साधर्मिक परिवारों ने कृपया संपर्क करे :

१. आवेदक का पुणे महानगरपालिका पुणे अथवा PCMC के सीमा के अंदर कमसे कम २ वर्ष निवास होना / नोकरी या व्यापार होना जरुरी है।

२. आवेदक का या सह आवेदक का भारतवर्ष में कहीं भी खुद का घर नहीं है उसीका आवंटन पात्र होनेपर विचार किया जायेगा ।

३. आवेदन के समय आवेदक की आयु ७० साल से कम होना अनिवार्य है।

४. आवेदक के परिवार की आमदनी सभी सूत्रोंसे रक्कम रु. ६,००,०००/– (६ लाख) से कम होनी चाहिए। आवेदक ने आमदनी प्रमाणपत्र विधिवत फॉर्म भर के जमा करना होगा ।

५. हर एक घर से मात्र एक हि आवेदन फार्म आगे की प्रक्रिया के लिए विचार में लिया जायेगा।

६. आवेदक ने आवेदन फार्म विधिवत भर के जीतो पुणे चॅप्टर के कार्यालय में जमा करना अनिवार्य है।

❊ संपर्क ❊ जीतो पुणे चैप्टर ऑफिस
सॉलिटेयर वर्ल्ड, ग्राउंड फ्लोर, सिग्नल के समीप,
गंगाधाम चौक, पुणे – ४११०३७
मो : ९०११५४१२१५ ●

कव्हर तपशील - मार्च २०२३

❖ **गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी**

गुरु आनंद तीर्थ चिचोंडी येथे ''गुरु चरण तीर्थ'' भूमी शुध्दिचा कार्यक्रम २५ फेब्रुवारी २०२३ रोजी भव्य कार्यक्रमात संपन्न झाला. भूमि शुध्दिचा लाभ पुणे येथील श्री. सुनिलजी, सचिनजी नहार व नहार परिवार व बेंगलोर येथील मे. मामाजी छगनलालजी नवरतनमलजी बंब ॲण्ड सन्सचे श्री. प्रवीणजी, अनिलजी बंब व बंब परिवाराला मिळाला. या परिवारांच्या हस्ते भूमी शुद्धिचा कार्यक्रम महासतीजी व मान्यवरांच्या सान्निध्यात संपन्न झाला.
(बातमी पान नं. १९)

❖ **जीतो नगर, पुणे**

जीतो पुणे चॅप्टर तर्फे जैन साधर्मिक परिवारांसाठी जीतो नगर आवास योजना निर्माण करण्यात येत आहे. या जीतो नगर मध्ये ४७७ फ्लॅटस् (1 BHK सुमारे ४४० स्क्वे. फुट) तयार होणार आहेत. साधर्मिक बंधूनी या संदर्भात जीतो ऑफिस मध्ये जाऊन फॉर्म भरुन द्यावेत. (बातमी पान नं. २०)

❖ **गौतम लब्धि डायग्नोस्टिक सेंटर, पुणे**

नगर रोड, गौतम लब्धि फाऊंडेशन तर्फे श्री. रमणलालजी कपूरचंदजी लुंकड – गौतम लब्धि डायग्नोस्टिक सेंटरचे उद्घाटन पद्मविभूषण डॉ. कांतीलालजी संचेती, माणिकचंद ग्रुपचे श्री. प्रकाशजी धारिवाल इ. मान्यवरांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ७३)

❖ **गुरु गौतममुनि मेडिकल ॲन्ड चॅरिटेबल ट्रस्ट, अरण्येश्वर, पुणे**

श्री गुरु गौतम मुनि मेडिकल ॲण्ड चॅरिटेबल ट्रस्टच्या केमोथेरेपी, फिजीओथेरेपी व आय केअर सेंटरचे उद्घाटन खासदार सौ. सुप्रिया सुळे, श्री. अमोलकचंदजी भंडारी, श्री. सतिशजी बनवट, श्री. ललितजी जैन इत्यादी मान्यवरांच्या हस्ते झाले. (बातमी पान नं. २१)

❖ **श्री. आनंदजी चोरडिया – पुरस्कार**

सुहाना ग्रुपचे श्री. आनंदजी चोरडिया यांना एलिमेंट ऑफ अर्थ पुरस्कार देऊन सन्मानित करण्यात आले. (बातमी पान नं. २३)

❖ **सुर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार २०२३**

सुर्यदत्त ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटच्या २५ व्या (रौप्य महोत्सवी) वर्धापन दिनानिमित्त सुर्यदत्त राष्ट्रीय पुरस्कार वितरण सोहळा नुकताच संपन्न झाला. 'सुर्यदत्त'च्या बावधन कॅम्पसमध्ये आयोजित कार्यक्रमात जग विख्यात शास्त्रज्ञ डॉ. रघुनाथ माशेलकर, अहिंसा विश्वभारतीचे संस्थापक आचार्य डॉ. लोकेश मुनी, अक्षरधाम परिवाराचे ज्ञानवत्सल स्वामी महाराज, भजनसम्राट अनुप जलोटा, मुरलीकांत पेठकर, अभिनेता रझा मुराद, 'सुर्यदत्त'चे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजयजी बी. चोरडिया इ. मान्यवरांच्या उपस्थित संपन्न झाले.
(बातमी पान नं. ७४)

❖ **डायग्नोपिन, गोवंडी, मुंबई – उद्घाटन**

डायग्नोपिन डायग्नोसिसची नवीन ब्रँच गोवंडी, मुंबई येथे सुरु करण्यात आली. यांचे उद्घाटन आमदार श्री. अबू माहामी यांच्या हस्ते व डायग्नोपिनचे

संचालक श्री. मितेशजी कोठारी, श्री. प्रफुल्ल कोठारी व मान्यवरांच्या उपस्थितत संपन्न झाले. (बातमी पान नं. ८९)

❖ **दि पूना मर्चन्ट चेंबर, पुणे**

दि पूना मर्चन्ट चेंबरच्या आधुनिक रुपातील व्यापार भवनचे उद्घाटन श्री. शांतीलालजी मुथा यांच्या हस्ते व चेंबरचे अध्यक्ष राजेंद्रजी बाठिया, उपाध्यक्ष अजितजी बोरा, सचिव रायकुमारजी नहार, सहसचिव ईश्वरजी नहार, माजी अध्यक्ष प्रवीणजी चोरबेले, 'जितो' पुणेचे अध्यक्ष राजेशजी साकला, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष विजयजी भंडारी यांच्या उपस्थितत संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ९१)

❖ **श्री. राजेश नाहर – पुरस्कार**

नागौर राजस्थान येथे नाहर कुलदेवी भवानी माता मंदिरची प्राणप्रतिष्ठा नुकतीच संपन्न झाली, यावेळी प्रतिष्ठा महोत्सवाचे चेअरमन व ट्रस्टचे कार्य अध्यक्ष श्री. राजेशजी पी. नाहर यांना नाहर डायमंड रत्न या पदवीने सन्मानित करण्यात आले.
(बातमी पान नं. ८८)

❖ **श्री. अजितजी सुराणा – पुरस्कार**

चांदवड येथील श्री नेमिनाथ जैन ब्रम्हचर्याश्रम या संस्थेचे प्रबंध समितीचे अध्यक्ष व मनमाड येथील प्रसिद्ध उद्योजक श्री. अजितजी संपतलालजी सुराणा यांना सावित्री बाई फुले पुणे विद्यापीठाचा मानाचा ''जीवन साधना'' गौरव पुरस्कार २०२३ प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं.९३)

❖ **कु. साक्षी छाजेड सर्वोत्कृष्ठ जलतरणपटू**

पुणे : एमआयटी-एडीटी विद्यापीठा तर्फे आयोजित वार्षिक राज्यस्तरीय आंतर-महाविद्यालयीन जलतरण क्रीडा स्पर्धेत कु. साक्षी मनोज छाजेड हिने तीन सुवर्णपदके, एक रौप्यपदाकांसह सर्वोत्कृष्ट जलतरणपटूचा पुरस्कार पटकावला.
(बातमी पान नं. ८७) ●

गांधी गुरुजी संस्था, कडा – मुंबई
निबंध स्पर्धा आयोजन

''प्रचलित लग्नातल्या चालीरीती योग्य का अयोग्य''

सदर विषयाचा निबंध सर्व वयोगटातील युवक-युवती करीता आहे.

सदर निबंधास शब्दांची मर्यादा नाही. तथापि निबंध सुटसुटीत, मुद्देसुद असावा. त्याच त्याच गोष्टी - मुद्दे पुन्हा-पुन्हा लिहू नयेत. भाषा साधी-सरळ असल्यास योग्य. अवघड शब्द लिहिण्याचे शक्यतो टाळावे त्यामुळे मत व्यक्त करण्यास वाव राहील. सदर निबंध शुध्द देवनागरी (मराठी) मध्ये असावा, पाटपोट नसावा. सदर निबंध स्वहस्ताक्षरात असावा व तो ३१ एप्रिल २०२३ पर्यंत पुढील पत्त्यावर पाठवावा.

निवड झालेल्या निबंधास पहिले क्रमांक पारितोषिक रु. ५०००/- (पाच हजार), दुसरे क्रमांक पारितोषिक रु. ३०००/- (तीन हजार), व तिसरे पारितोषिक रु. २०००/- (दोन हजार) असे असेल.

निबंध निवड समिती निबंधाची निवड करुन क्रमांक देतील व त्याचा निर्णय ''जैन जागृति'' मध्ये जाहीर केला जाईल (पारितोषिक विजेत्यांचे नाव व बक्षीस क्रमांक).

निबंध पाठविण्याचा पत्ता : आर.आर. गांधी
मा. प्रधान जिल्हा न्यायाधीश
सी-१, सौदामिनी, हाजी अली सरकारी वसाहत,
हाजी अली, मुंबई ४०००३४.
मो. : ७९७७४८३७६५ ●

जैन जागृति – एप्रिल २०२३
भगवान महावीर जन्म कल्याणक अंक
या अंकासाठी २० मार्च पर्यंत जाहिरात द्या.